50th Anniversary of Haryana

While Haryana was carved as a separate political entity of the Indian Union on November 1, 1966, the State has been the crowning jewel of the 'Land of Gods' since times immemorial. The golden history of the State is established from an inscription from Vikram Samvat 1384. The inscription reads as 'Deshosti Haryanakhya Prithvyam Swargsannibha', meaning 'There is a State named Haryana, which is akin to heaven on Earth'. Haryana has had a glorious history since the Vedic Period. It was the home of 'Bharatvansh' after which the country was named as 'Bharat'. Haryana means 'Hari ka Aana'. It is said that Lord Krishna came to this region during Dwapara Yuga, and therefore, it came to be known as 'Haryana'. This divine land represents the entire Indian culture. This is where the Vedas and Upanishads were scripted on the banks of Saraswati river and Lord Krishna delivered the celestial message of the Shreemad Bhagavad Gita. Haryana was also a part of the Indus Valley Civilisation, with centres such as Banawali and Rakhigarhi. Rakhigarhi, a village in district Hisar, which was a highly-developed centre of the above mentioned Civilisation, is considered to be more than 5,000 years old.

In the medieval times after the departure of the Huns, Raja Harshvardhan made Thanesar near Kurukshetra his capital during the seventh century. Prithviraj Chauhan got forts constructed at Taraori and Hansi in the 12th century. This land was the site of several significant battles which changed the face of Indian history. In 1526, Babur, the ruler of Kabul, laid the foundation of the Mughal Rule in India by defeating the ruler of Delhi, Sultan Ibrahim Lodhi, in the First Battle of Panipat. In 1556, Akbar defeated Hemchandra Vikramaditya, who was popularly known as 'Hemu', in the Second Battle of Panipat. Afghan raider Ahmad Shah Abdali defeated the Marathas in the Third Battle in 1761.

Haryana has played a significant role in shaping the history of India between the arrival of Muslim rulers and the emergence of Delhi as the royal capital. Following this, Haryana supported Delhi and remained in the background till the first struggle for freedom in 1857. When the British Empire was re-established after suppression of the revolt, the kingdoms of Nawabs of Jhajjar and Bahadurgarh, and those of the king of Ballabhgarh and Rao Tula Ram of Rewari were taken away from them. These kingdoms were either merged with the British territories or handed over to the administrators of Patiala, Nabha and Jind. People of the region played a leading role in the Revolt of 1857 and the consequent Freedom Struggle by participating in large numbers. The rulers of kingdoms and farmers fought many battles against the British, who faced defeat in many of these battles. Most of these battles were fought in Sonepat, Rohtak, Sirsa and Hisar area, and the present-day Haryana came into existence with the reorganisation of Punjab on November 1, 1966.

Today, Haryana is not only one of the fast developing States of the Indian Union, but is also a trendsetter and a place of ultimate choice for entrepreneurs all over the world. Every tenth soldier in the Armed Forces is from Haryana. The State is the second largest contributor of foodgrains to the Central Pool. It has many other outstanding achievements to its credit. The State had created landmarks in various fields to record its presence within and outside the country.

Haryana has earned the tag of 'Champion State' in the field of sports by participating and winning medals in international events such as Asian Games, Commonwealth Games and the Olympics. The emergence and development of Gurugram, which adjoins the National Capital New Delhi, as a global destination, has made Haryana a truly 'Happening State', as well as the engine of growth and opportunities for the people.

Now Haryana is completing 50 years of its glorious journey on November 1, 2016. It has been decided to hold year-long Swarna Jayanti celebrations up to October 31, 2017 in a magnificent manner. The State Government is working with the credo of 'Sabka Saath-Sabka Vikas' and 'Haryana Ek-Haryanvi Ek' in sync with the vision 'Antyodaya' as laid down by Pandit Deen Dayal Upadhyaya. The Government has taken up the responsibility of ensuring development of the entire state of Haryana. The State Government has launched several welfare schemes and programmes in the last two years, including 'Pradhan Mantri Fasal Bima Yojana' for farmers. The construction work on the Kundli-Palwal-Manesar Expressway project has been resumed. The other significant initiatives include procurement of moong dal by the government agencies on Minimum Support Price, and water being released in Hasanpur Minor and Danchauli Minor in Southern Haryana, the allocation of small mining units and blocks being carried out through e-auction to bring about transparency.

The Department of Posts is pleased to release a Commemorative Postage Stamp on this historical occasion of celebration of the "50th Anniversary of Haryana".

Credits:-

Text	:	Based on the material received from proponent
Stamp / FDC/ Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



हरियाणा की पचासवीं वर्षगांठ
50th ANNIVERSARY OF HARYANA

विवरणिका
BROCHURE

हरियाणा की 50वीं वर्षगांठ

भारत संघ के मानचित्र पर हरियाणा का उदय भले ही 1 नवंबर, 1966 को हुआ हो, परन्तु प्राचीन से ही यह "देवधरा" का विशिष्ट आभूषण रहा है। इसके स्वर्णिम इतिहास की पुष्टि 1384 विक्रमी सम्वत् के एक शिलालेख से हो जाती है। इस शिलालेख पर लिखा है- 'देशोस्ति हरयाणाख्य: पृथिव्यां स्वर्गसन्निभ:' अर्थात 'हरियाणा नाम का एक प्रदेश है, जो इस धरती पर स्वर्ग के समान है'। वैदिक युग से ही हरियाणा का एक गौरवशाली इतिहास रहा है। हरियाणा उस भरतवंश का गृह रहा है, जिनके नाम पर देश का नाम भारत पड़ा। हरियाणा का अर्थ है 'हरि का आना'। कहते हैं कि द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण का यहां आना हुआ था और तभी से इस क्षेत्र का नाम 'हरियाणा' पड़ा। यह पावन धरा सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है। यहीं पावन सरस्वती नदी के तट पर वेदों तथा उपनिषदों की रचना हुई। यही वो धरा है जहां भगवान श्री कृष्ण ने श्रीमद् भगवद्गीता के माध्यम से अमर संदेश दिया। हरियाणा प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता का भाग भी रहा है जिसमें बनावाली और राखीगढ़ी, जैसे केन्द्र थे। उस सभ्यता का अति विकसित केंद्र राखीगढ़ी आज जिला हिसार का गांव है। यह स्थल 5,000 वर्ष से भी अधिक पुराना माना गया है।

मध्यकाल में हूणों के जाने के बाद राजा हर्षवर्धन ने सातवीं शताब्दी में कुरुक्षेत्र के निकट थानेसर को अपनी राजधानी बनाया। पृथ्वीराज चौहान ने 12वीं शताब्दी में तरावड़ी और हांसी में किले बनाए। इसी धरती पर कई महत्वपूर्ण युद्ध हुए जिन्होंने भारत के इतिहास को बदल कर रख दिया। वर्ष 1526 में हुए पानीपत के प्रथम युद्ध में काबुल के शासक बाबर ने दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को शिकस्त देकर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखी। वर्ष 1556 में पानीपत के दूसरे युद्ध में अकबर ने हेमू के नाम से लोकप्रिय सम्राट हेमचंद्र विक्रमादित्य को हराया। पानीपत का तीसरा युद्ध 1761 में हुआ जिसमें अफगान आक्रमणकारी अहमद शाह अब्दाली ने मराठों को हराया।

हरियाणा ने मुसलमान शासकों के आगमन और शाही राजधानी के रूप में दिल्ली के उदय होने तक भारत के इतिहास में एक उल्लेखनीय भूमिका निभाई। इसके पश्चात हरियाणा ने दिल्ली के सहायक की भूमिका निभाई और 1857 में भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम तक गुमनाम रहा। विद्रोह को कुचलने के बाद, जब ब्रिटिश शासन पुन: स्थापित हो गया, तो झज्जर और बहादुरगढ़ के नवाबों, बल्लभगढ़ के राजा और रेवाड़ी के राव तुला राम को उनकी रियासतों से वंचित कर दिया गया। उनकी रियासतों को या तो ब्रिटिश रियासतों में विलय कर दिया गया या फिर पटियाला, नाभा और जींद के शासकों को सौंप दिया गया। यहां के लोगों ने 1857 के आन्दोलन में और उसके बाद के भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में बड़ी संख्या में भाग लेकर, अग्रणी भूमिका निभाई। अंग्रेजों के विरूद्ध यहां की रियासतों के शासकों और किसानों ने कई लड़ाइयां लड़ी और कुछ लड़ाइयों में तो ब्रिटिश सेना को मुंह की खानी पड़ी। इनमें से अधिकतर लड़ाइयां सोनीपत, रोहतक, सिरसा और हिसार में लड़ी गईं। 1 नवंबर, 1966 को पंजाब के पुनर्गठन के साथ ही आज का हरियाणा अस्तित्व में आया।

आज हरियाणा न केवल भारत संघ के तेजी से विकास करने वाले राज्यों में से एक है, बल्कि एक पथ-प्रदर्शक भी है और विश्वभर के उद्यमियों के लिए पहली पंसद है। देश की सेनाओं में प्रत्येक दसवां जवान हरियाणा से है। हरियाणा, केन्द्रीय खाद्यान्न भंडार में खाद्यान्नों का योगदान देने वाला दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। इसके खाते में और भी उल्लेखनीय उपलब्धियां हैं। इसने देश-विदेश में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाकर विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है।

हरियाणा ने एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और ओलंपिक जैसी अंतर्राष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं में भाग लेकर और पदक जीतकर, खेलों के क्षेत्र में 'चैम्पियन स्टेट' का तमगा हासिल किया है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से सटे गुरुग्राम के वैश्विक गन्तव्य के रूप में उभरने और इसके विकास से हरियाणा, सही मायने में 'हैपनिंग स्टेट' और विकास का इंजन बना है जिसने लोगों को अपार अवसर उपलब्ध करवाए हैं।

अब हरियाणा 1 नवंबर, 2016 को अपने गौरवशाली सफर के 50 वर्ष पूरे कर रहा है। इसके दृष्टिगत, 31 अक्तूबर, 2017 तक एक वर्ष तक चलने वाले भव्य स्वर्ण जयंती समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। राज्य सरकार, पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय के दर्शन के अनुरूप 'सबका साथ-सबका विकास' और 'हरियाणा एक-हरियाणवी एक' के मूलमंत्र पर कार्य कर रही है। सरकार ने संपूर्ण हरियाणा राज्य के विकास का बीड़ा उठाया है। विगत दो वर्षों के दौरान राज्य सरकार द्वारा अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं व कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। किसानों की बेहतरी के लिए 'प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना' शुरू की गई है। कुण्डली-मानेसर-पलवल एक्सप्रेस-वे का निर्माण-कार्य पुन: शुरू किया गया है। अन्य उल्लेखनीय पहलों में, मूंग की सरकारी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद, दक्षिण हरियाणा के हसनपुर माइनर और दनचौली माइनरों में पानी पहुंचाना शामिल है। खनन के ठेकों में पारदर्शिता लाने और भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए छोटी खनन इकाइयों व ब्लॉकों का आबंटन ई-नीलामी के माध्यम से किया गया है।

डाक विभाग, "हरियाणा की 50वीं वर्षगांठ" के उपलक्ष्य में आयोजित ऐतिहासिक समारोह के अवसर पर स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विरूपण	:	श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: :	500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक टिकटें Stamps Printed	: :	510220 510220
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The above philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00